بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 16.09.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

# आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा-ए-राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का जीवन परिचय तथा सद्गुणों का ईमान वर्धन वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज, बयान फ़र्मूदा 16 सितम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु के कारनामों का वर्णन हो रहा था। इस विषय में ज़िम्मियों के अधिकारों का कुछ विवरण है। ज़िम्मी का अभिप्रायः वे लोग हैं जो इस्लामी शासन का आज्ञा पालन स्वीकार करके अपने धर्म पर स्थापित रहे तथा मुसलमानों ने उनकी रक्षा करने का दायित्व लिया। ये लोग सैन्य सेवाओं तथा ज़कात की अदायगी से वंचित थे। अतः इन ज़िम्मियों के व्यस्क, स्वस्थ तथा कार्यशील लोगों से चार दर्हम वार्षिक जिज़्या वसूल किया जाता था। बूढ़े, अपाहिज, दीन तथा मोहताज एवं बच्चे इससे बरी थे अपितु अपाहिजों तथा मोहताजों को इस्लामी बैतुल माल से सहायता दी जाती थी। इराक़ तथा शाम देश पर विजय के समय अनेक ग़ैर मुस्लिम आबादियाँ जिज़्ये की अदायगी देना स्वीकार करके ज़िम्मी बन गए थे। इनके साथ जो सन्धि पत्र लिखे गए उनमें ये धाराएँ शामिल थीं कि उनके धार्मिक स्थल एवं गिरजे तोड़े नहीं जाएँगे तथा न ही उनका कोई ऐसा क़िला गिराया जाएगा जिसमं वे आवश्यता पड़ने पर दुश्मन से मुक़ाबला करते समय क़िला बन्द होते हैं। शंख बजाने तथा त्योहार के समय सलीब निकालने से रोका न जाएगा।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में एक महान, अद्वित्तीय तथा बड़ा कारनामा क़ुर्आन को जमा करना था। यमामा के युद्ध में लगभग सात सौ क़ुर्आन के हाफ़िज़ सहाबा किराम रज़ी. शहीद हुए तो हज़रत उमर रज़ी. का सीना ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन जमा करने के लिए खोल दिया। सही बुख़ारी में उल्लिखित विवरण के अनुसार यमामा के युद्ध के बाद हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. को हज़रत अबू बकर रज़ी. ने बुलाया तथा उन्हें बताया कि हज़रत उमर रज़ी. ने क़ुर्आन को एकत्र करने के विषय में सुझाव दिया है और यूँ यह काम हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. को दिया गया। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! यदि हज़रत अबू बकर रज़ी. एक पहाड़ को उसके स्थान से दूसरे स्थान

पर ले जाने का आदेश देते तो वह मेरे लिए इस काम से सरल होता। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. कहते हैं कि मैंने क़ुर्आन को खजूरों की शाखाओं, सफ़ेद पत्थरों तथा लोगों के सीनों से एकत्र किया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. के द्वारा जिस क़ुर्आन करीम का एक प्रति के रूप में संकलित करवाया उसको सहीफ़ा-ए-सिद्दीक़ी कहा जाता है। यह हज़रत अबू बकर रज़ी. फिर हज़रत उमर रज़ी. और फिर उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ी. सुपुत्री उमर रज़ी. के पास रहा। सहीफ़ा-ए-सिद्दीक़ी से हज़रत उसमान रज़ी. ने कुछ प्रतियाँ करवाईं तथा वह मूल प्रति हज़रत हफ़सा रज़ी. को वापस कर दो। जब 54 हिजरी में मर्वान मदीने का हाकिम हुआ तो उसने यह नुस्ख़ा हज़रत हफ़सा रज़ी. से लेना चाहा तो आप रज़ी. ने इंकार कर दिया। हज़रत हफ़सा रज़ी. के देहान्त के बाद मर्वान ने यह नुस्ख़ा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी. से लेकर उसे नष्ट कर दिया।

हज़रत अली रज़ी. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला अबू बकर रज़ी. पर दया करे, उन्होंने सबसे पहले क़ुर्आन मजीद को पुस्तक के रूप में सुरक्षित किया था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि सत्य यह है कि दुनिया में कोई लेखाकृति इस निरन्तरता से उपलब्ध नहीं जिस निरन्तरता से क़ुर्आन करीम मौजूद है। फ़रमाया- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में पूरा क़ुर्आन लिखा गया था, यद्यपि वह एक पुस्तक के रूप में न था, अतः हज़रत अबू बकर रज़ी. ने क़ुर्आन करीम जमा करने का निर्देश दिया, लिखने का आदेश नहीं दिया। इस य प्रकार शब्द स्वयं बता रहे हैं कि उस समय क़ुर्आन के पृष्ठों को एक जिल्द में एकत्र करने का सवाल था, लिखने का सवाल न था। हज़रत उसमान रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में पूरी मुस्लिम दुनिया को एक शब्दोच्चरण पर जमा कर दिया गया था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ख़लीफ़-ए-अव्वल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के बाद अल्लाह तआला ने तृत्तीय ख़लोफ़ः हज़रत उसमान रज़ी. को यह सामर्थ्य प्रदान किया तो आप रज़ी. ने अरब के शब्दकोष के अनुसार क़ुर्आन को एक ही शब्दोच्चारण पर एकत्र किया तथा उसे समस्त देशों में फैला दिया।

हज़रत अबू बकर रज़ी. की ज़ात से सम्बंधित पहली बार हाने वाले कारनामों को 'अव्वलियाते अबू बकर' कहा जाता है जो ये हैं कि आप रज़ी. सबसे पहले इस्लाम लाए, मक्का में सबसे पहले अपने घर के सामने आप रज़ी. ने मस्जिद बनाई, मक्के में सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समर्थन में काफ़िरों से लड़े। सबसे पहले आप रज़ी. ने इस्लाम लाने के कारण अत्याचार एवं यातनाएं सहने वाले अनेक ग़ुलामों तथा बांदियों को स्वतंत्र करवाया। सबसे पहले क़ुर्आन करीम को एक पुस्तक के रूप म जमा किया। सबसे पहले आप रज़ी. ने क़ुर्आन का नाम ''मस्हफ़'' रखा। सबसे पहले ख़लीफ़-ए-राशिद का पद प्राप्त किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल में सबसे पहले हज के अमीर नियुक्त हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन में सबसे पहले नमाज़ में मुसलमानों की इमामत की। इस्लाम में सबसे पहले बैतुल माल स्थापित किया। आप रज़ी. इस्लाम के पहले ख़लीफ़ः हैं जिनका मुसलमानों ने अनुदान निश्चित किया। इसी प्रकार आप रज़ी. पहले ख़लीफ़ः हैं जिन्होंने अपना उत्तराधिकारी मनोनीत फ़रमाया। आप रज़ी. पहले ख़लीफ़ः हैं जिनकी ख़िलाफ़त की बैअत के समय उनके वालिद जीवित थे। इस्लाम में आप रज़ी. सबसे पहले व्यक्ति थे जिन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई उपाधि

प्रदान की। आप रज़ी. पहले व्यक्ति थे जिनकी चार पीढ़ियों को सहाबी होने का स्तर मिला, इनके वालिद सहाबी हज़रत अबू क़हाफ़ः रज़ी, हज़रत अबू बकर रज़ी. स्वयं सहाबी, इनके बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर रज़ी. और इनके पोते हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर रज़ी., ये सब सहाबी थे।

हज़रत अबू बकर रज़ी. का हुल्या हज़रत आयशा रज़ी. यूँ बयान फ़रमाती हैं कि आप रज़ी. गोरे रंग के दुबले पतले व्यक्ति थे। गालों पर मांस कम, झुकी हुई कमर, आँखें भीतर की ओर तथा माथा उँचा था। हज़रत अनस रज़ी. बयान करते हैं कि आप रज़ी. अपने बालों को ख़िज़ाब से रंगीन किया करते थे। आप रज़ी. ने एक पक्षी को देखा तो फ़रमाया कि काश! मैं इस पक्षी की भांति होता कि न इसका कोई हिसाब होगा तथा न ही यह उत्तर दायी है।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अपने देहान्त के समय हज़रत आयशा रज़ी. से फ़रमाया कि ऐ मेरी बेटी! तू जानती है कि लोगों में से मुझे सबसे प्रिय तुम हो, मैंने अपनी अमुक स्थान की सम्पत्ति तुम्हें भेंट रूप में दी थी किन्तु तुमने उस पर क़बज़ा नहीं किया। अब मैं चाहता हूँ कि वह जगह लौटा दो ताकि वह मेरे सब बच्चों में अल्लाह की किताब क बताए हुए निदश के अनुसार विभाजित हो और में ख़ुदा के समक्ष कह सकूँ कि मैंने अपनी संतान में से किसी को दूसरे पर प्रमुखता नहीं दी।

जब ख़िलाफ़त का चोला अल्लाह तआला ने आप रज़ी. को पहनाया तो अगले दिन आप अपने दैनिक नियम के अनुसार कपड़ों क थान कन्धे पर रखे व्यापार करने के लिए निकले। रास्ते में हज़रत अबू उबैदा रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. से भेंट हुई, जिनके कहने पर आप रज़ी. के लिए अनुदान निश्चित कर दिया गया। वह अनुदान क्या था, आप रज़ी. को दो चादरें मिलती थीं। जब वे पुरानी हो जातीं तो वापस करके दूसरी ले लेते। यात्रा के लिए सवारी तथा ख़िलाफ़त से पहले के ख़र्च के अनुसार अनुदान लिया करते।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. पूरे इस्लामी विश्व के बादशाह थे किन्तु उनको क्या मिलता था, पब्लिक के रुपए की वे रक्षा करने वाले थे किन्तु स्वयं उस माल पर उनका कोई अधिकार नहीं था।

आप रज़ी. के हाथ से यदि लगाम गिर जाती तो आप रज़ी. ऊँटनी से उतरते और उसे स्वयं उठाते, पूछने पर फ़रमाते कि मुझे मेरे प्रिय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया था कि लोगों से सवाल न करना।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार लोगों को यह कहते हुए सुना कि अबू बकर को हम पर क्या प्रमुखता है? जैसे नमाज़ हम पढ़ते हैं और जैसे रोज़ा हम रखते हैं, वे भी ऐसा ही रखते हैं, तो आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू बकर की प्रमुखता नमाज़ रोज़े के कारण नहीं बल्कि उस नेकी के कारण है जो उनके दिल में है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक आयते क़ुर्आनी की तफ़सीर बयान फ़रमाते हुए हज़रत अबू बकर का स्तर एवं उच्च कोटि यूँ बयान फ़रमाई है कि- अल्लाह तआला ने यहाँ फ़रमाया है कि तू इबादत करता रह, जब तक कि तुझे सम्पूर्ण विश्वास का स्तर न प्राप्त हो जाए तथा सारे पर्दे एवं अंधकार के पर्दे दूर होकर यह समझ में आ जावे कि अब मैं वह नहीं हूँ जो पहले था, बल्कि अब तो नया देश, नई

धरती, नया आकाश है तथा मैं भी कोई नया प्राणी हूँ। यह दूसरा जीवन वही है जिसको सूफ़ी बक़ा के नाम से याद करते हैं। जब इंसान उस स्तर पर पहुंच जाता है तो अल्लाह तआला की आत्मा का समावेश उसमें होता है, फ़रिशतों का उस पर अवतरण होता है। यही वह भेद है जिस पर ख़ुदा के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. के बारे में फ़रमाया कि यदि कोई चाहे कि मृत शरीर को धरती पर चलता हुआ देखे तो वह अबू बकर को देखे और अबू बकर का स्तर उसके प्रत्यक्ष कर्मों के कारण नहीं अपितु इस बात से है जो उसके दिल में है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिनकी लुंगी नीचे लटकती है वे नरक में जाएँगे। हज़रत अबू बकर रज़ी. यह सुन कर रो पड़े क्यूँकि उनकी लुंगी भी वैसी ही थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तू उनमें से नहीं है। अभिप्रायः यह है कि धारणा का मूल प्रभाव होता है तथा प्रतिष्ठा का ध्यान रखना अति आवश्यक है।

आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्पूर्ण आज्ञा पालन, इश्क़े रसूल स. तथा स्वाभिमान वाली घटना है कि एक बार हज़रत अबू बकर रज़ी. रसूलुल्लाह स. के घर आए तो हज़रत आयशा रज़ी. हुज़ूर स. के साथ कुछ तेज़ बोल रही थीं। यह देख कर आप रज़ी. से न रहा गया और अपनी बेटी हज़रत आयशा रज़ी. को मारने के लिए आगे बढ़े। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह देख कर दोनों बाप बेटी के बीच आ गए तथा आयशा रज़ी. को सम्भावित मार से बचा लिया। जब हज़रत अबू बकर रज़ी. चले गए तो आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उपहास की शैली में हज़रत आयशा रज़ी. से फ़रमाया कि देखा, आज हमने तुम्हें तुम्हारे अब्बा से कैसे बचाया। कुछ दिनों पश्चात हज़रत अबू बकर रज़ी. दोबारा तशरीफ़ लाए तो हज़रत आयशा रज़ी. हंसी ख़ुशी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बात चीत कर रही थीं, यह देख कर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि तुमने मुझे अपनी लड़ाई में शामिल किया था अब अपनी ख़ुशी में भी कर लो। यह सुन कर आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हमने शामिल किया।

ख़ुत्बः के अंत में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि शेष वर्णन इंशाअल्लाह आगे बयान होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

**हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652**

**टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131**